रात के अंधेरे में

(नाटक प्रस्तुत करने की योजना इस प्रकार है— रोशनी के दो दायरे हैं। एक दायरे में कोरस घूमता है और दूसरे दायरे में नाटक का मंचन होता है। अगर रोशनी का इंतजाम न हो सके तो कोरस पीठ घुमाकर खड़ा रह सकता है और भूमिका के वक़्त दर्शकों से संबोधित हो सकता है। नाटक शुरू होने पर रोशनी कोरस के दायरे पर पड़ती है। नुक्कड़ नाटक की तकनीक में यह नाटक छह पात्रों से हो सकता है। पात्र घूमते-घूमते अलग-अलग रूप धारण कर लेते हैं।)

एक : यार ये तो बड़ी अजीब बात हुई है।

दो : तेरे लिए तो हर बात अजीब होती है।

तीन : शाही बिल्डिंग वाली औरत का रात को क़त्ल हो गया।

चार : सुबह देखा तो खून का तालाब भरा था।

एक : एक चीख़ की आवाज़ मैंने भी सुनी थी।

दो : अब पुलिस आई हुई है।

तीन : जो औरों को अपनी अदाओं से क़त्ल करती थी, वो खुद क़त्ल हो गई।

चार : पर इसकी वजह क्या हो सकती है?

एक : इसके आशिकों की आपसी दुश्मनी, और क्या?

दो : आशिक भी तो उसके कम नही थे।

तीन : एक भाई साहब तो यहीं खड़े हैं।

चार : हम तो यार दूर से ही मज़ा लेने वाले थे।

एक : हां, ऐसे-वैसों को वो नज़दीक कहां आने देती थी।

चार : न तेरा अपने बारे में क्या विचार है?

एक : हमने तो अपने बारे में कभी कोई विचार बनाया ही नहीं।

दो : हां, ये तो बिना विचार के ही घूम रहे हैं।

तीन : पर हम तो बात आशिकों की कर रहे थे। कल वो काली कार तो शाम से ही दरवाज़े पर खड़ी थी।

चार : लोग कह रहे हैं कि किसी बड़े अफ़सर की है।

एक : पर मैंने तो सुना है, किसी मंत्री की है।

दो : देखा अभी तक किसी ने नहीं, कार में से एक आदमी निकलता, तेजी से चलता, अंधेरे में गायब हो जाता था।

तीन : पर थैला लटकाए अंदर जाता हुआ एक कवि आम ही देखा गया है।

चार : तो तेरा क्या ख़्याल है, यह क़त्ल उस कवि ने किया होगा?

एक : उस कवि से मक्खी तो मारी नहीं जाती, औरत को क्या मारेगा?

दो : हां, औरत को मारने वाले ये पहलवान जो खड़े हैं।

एक : अरे औरत अपनी है, उसे पीटें, मारें तुम्हें क्या?

दो : मुझ अकेले को नहीं, सब को है। शराब पीकर आदमी औरत को पीटता रहे, उसकी चीखों की आवाज़ सारे मोहल्ले में गूंजती रहे, तो क्या मोहल्ले का अमन खराब नहीं होता?

एक : अरे हम तो सिर्फ पीटते हैं, वो तो क़त्ल कर गए, फिर भी मोहल्ले का अमन खराब नहीं हुआ? गरीब हूं इसलिए सारे दबा लेते है। शराब पीता हूं, अपने पैसों से पीता हूं, किसी से मांगकर नहीं पीता यहां ज़िस्मफरोशी होती है, वो नहीं किसी को दीखती। कह रहे हैं, बीवी को मारता हूं, मारता हूं तो प्यार भी करता हूं। वो छह बच्चों की मां है, सारे मेरे हैं, किसी और के नहीं, मेरे प्यार की निशानी। लोग कह रहे हैं, काली कार शाम को खड़ी थी। न वो राजदूत मोटर साइकिल वाला किसी ने नहीं देखा जो रात नौ बजे अंदर गया था।

एक साथ : राजदूत मोटर साइकिल वाला?

दो : वो ज्ञानी, खुली दाढ़ीवाला?

एक : अरे खुली दाढ़ी वाला ज्ञानी हो या धोती वाला पंडित हो, औरत के मामले में सब एक से हैं।

तीन : पर क्या वो भी उसके आशिकों में से था?

एक : आशिकों में था या बिचौलियों में था, यह कौन कह सकता है? पर मोटर साइकिल उसका बाहर खड़ा था।

दो : हां यार, शाही बिल्डिंग वाली औरत का एक भाई भी है। वह अब बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिया।

तीन : दिखाई क्यों नहीं दिया? रात को मैंने अंदर जाते देखा है।

एक : तो वो भी कल आया था ?

चार : कुछ पैसे लेने आया होगा। कहते हैं, यह औरत बड़े ग़रीब घर से थी। रघुनाथ शाह इसे ख़रीदकर लाया था।

दो : ख़रीदकर ही लाया होगा, नहीं तो 16–17 साल की लड़की एक अधेड़ से ब्याह क्यों करती ?

तीन : पर ये कौन–सी घाटे में रही ? रघुनाथ तो चार साल ही जिया और ये बैठे–बैठाए सारी जायदाद की मालिक बन गई।

एक : पर औरत को सिर्फ जायदाद नहीं, और भी बहुत कुछ चाहिए।

दो : पुलिस दो घंटे से अंदर गई है, अभी तक वापिस नहीं आई।

तीन : जाकर देखो तो सही, क्या कर रही है ?

दो : ना भई मैं नहीं जाता, अगर मुझे वहां बैठा लिया तो मैं क्या कर लूंगा ?

चार : अरे नहीं बैठाती, डर क्यों रहा है।

दो : तो तू जाकर देख ले न।

तीन : हां तू ही जा, और पुलिस वाले इसके वाकिफ़ भी हैं।

एक : क्यों, इसके मामे लगते हैं ?

दो : नहीं, ससुर लगते हैं, एक बार उनके पास 'बड़े घर' में भी रह आया है।

चार : ओए सालो, बड़े घर भी हमारे जैसे मर्द जाते हैं तुम्हारे जैसे दुक्की–तिक्की नहीं जाते।

एक : *(अंदर की तरफ देखकर)* इंस्पेक्टर साहब आ रहे हैं।

(इंस्पेक्टर और हवलदार आते हैं। वे उनसे नज़रें बचाते हैं, इंस्पेक्टर उनके नज़दीक आता है।)

इंस्पेक्टर : तुम यहीं के रहने वाले हो ?

एक : जनाब एक काली कार आई: डी.ए.वी.2312 नंबर था उसका।

दो : एक राजदूत मोटर साइकिल पी.बी.एक्स. 1648।

तीन : एक कवि थैला नंबर... नंबर नहीं, खद्दर के थैले वाला।

चार : एक भाई आया था जो बिल्कुल गरीब था।

इंस्पेक्टर : मुझे सब पता है।

एक : *(झोली उठाते हुए)* इन्हें सब पता है। तजुर्बेकार आदमी हैं।

दो : सूंघकर ढूंढ लेते हैं।

तीन : पुलिस की आंख से कौन छुप सकता है ?

चार : टायर के निशान से जान लेते हैं कि मोटर साइकिल किस मार्के का है।

इंस्पेक्टर : मैं जा पूछूं, वही बताना है।

हवलदार : जनाब, इन्होंने बगैर पूछे ही सब कुछ बता दिया है।

इंस्पेक्टर : इनके नाम नोट कर ले, इनकी ज़रूरत पड़ सकती है।

(इंस्पेक्टर जाता है, एक, दो, तीन, चार हवलदार के नज़दीक आते हैं।)

एक : हवलदार साहब, क़त्ल किस वक़्त हुआ?

हवलदार : चार घंटे पहले।

दो : अब क्या होगा?

हवलदार : काली कार वाले से पूछा जाएगा कि वह रात को दो बजे कहां था?

तीन : और उस कवि के बारे में क्या राय है?

हवलदार : पूछा तो उससे भी जाएगा कि वो रात के दो बजे कहां था?

एक : और राजदूत मोटर साइकिल वाले से नहीं पूछा जाएगा?

हवलदार : पूछा जाएगा, हर एक से पूछा जाएगा कि रात को दो बजे कहां थे?

एक : *(दो को संबोधित करके)* पूछा जाएगा रात को दो बजे कहां थे?

दो : *(तीन को संबोधित करके)* हां, पूछा जाएगा रात को दो बजे कहां थे?

तीन : *(चार को संबोधित करके)* हां, पूछा जाएगा रात को दो बजे कहां थे?

चार : *(दर्शकों को संबोधित करके)* हां, पूछा जाएगा वो काली कार वाला रात को दो बजे कहां था, राजदूत मोटर साइकिल वाला कहां था, वो कवि कहां था, वो भाई कहां था?

('रात को दो बजे कहां थे' की आवाज़ होती है, तब रोशनी एक मंत्री और ठेकेदार पर पड़ती है।)

मंत्री : *(घड़ी देखकर)* तो तुम ठीक दो बजे पहुंच गए?

ठेकेदार : समय की पाबंदी हमारे धंधे का उसूल है जनाब।

मंत्री : बहुत अच्छी बात है। मेरे सेक्रेटरी ने सारी बात आपको बता दी होगी?

ठेकेदार : जनाब वो तो बता दी है, पर यह तो जुल्म है।

मंत्री : जुल्म क्यों है? आखिर हम भी किसी के आगे जवाबदेह हैं।

ठेकेदार : पर जनाब पहले एक्साइज मिनिस्टर साहब ने इससे आधी कीमत पर फैसला किया था।

मंत्री : उन्होंने आधी कीमत पर फैसला किया था, इसीलिए तो वो आधे वक़्त तक वज़ीर रहे। वे पार्टी को पांच लाख देकर टरकाना चाहते थे। पार्टी की ज़रूरत है दस लाख।

ठेकेदार : दस लाख ?

मंत्री : हर महकमे की ज़रूरत होती है। यह महकमा हमने पार्टी से दस लाख में खरीदा है।

ठेकेदार : क्या पार्टी भी महकमे बेचती है ?

मंत्री : यहां हर चीज़ बिकती है, तुम शराब बेचते हो, पार्टी महकमा बेचती है।

ठेकेदार : पर यह कीमत तो जनाब खाल उतारने जैसी है।

मंत्री : व्यापार खाल उतार लेने का ही नाम है, पार्टी हमारी खाल उतारती है, हम तुम्हारी खाल उतारते हैं, तुम आगे लोगों की खाल उतारते हो।

ठेकेदार : पर जनाब हमारी तो पूरे साल की बिक्री ही सत्ताईस लाख से ज़्यादा नहीं, बीच में से दस लाख... मतलब हमारी कुछ लागत भी होती है।

मंत्री : कौन कहता है तुम लागत करो। गोली को पानी में घोलो, शराब बन जाती है। वो शराब तुमने नहीं पीनी है, और हिन्दोस्तान के लोग ऐसे हैं कि ज़हर भी पी जाते हैं, पर फिर भी नहीं मरते। अगर मरते तो हिंदोस्तान की आबादी अस्सी करोड़ न होती। सैंतीस,अड़तीस साल तक थोड़ा ज़हर पिलाया है हमने उन्हें ?

ठेकेदार : पर महकमे के इंस्पेक्टर किसी वक़्त भी तंग कर सकते हैं।

मंत्री : उनकी कीमत उन्हें दो, आखिर एक्साइज़ महकमे के इंस्पेक्टर हैं।

ठेकेदार : वो अपनी ही नहीं, अपने अफ़सरों की भी कीमत मांगते हैं।

मंत्री : उनके अफ़सरों की कीमत अदा करो, आखिर एक्साइज़ महकमे के अफसर हैं।

ठेकेदार : अफ़सर कहते हैं उन्हें कमिश्नर का भी हिस्सा निकालना है।

मंत्री : कमिश्नर का भी हिस्सा निकालो, आखिर एक्साइज़ महकमे के कमिश्नर हैं।

ठेकेदार : पर दस लाख... ?

मंत्री : वो दस लाख तो पार्टी का हिस्सा है। मैंने यह महकमा दस लाख में पार्टी से खरीदा है। इसमें मेरा कोई हिस्सा नहीं, पर उसमें मेरा

हिस्सा ज़रूर होगा क्योंकि मैं एक्साइज़... ।

ठेकेदार : एक्साइज महकमे के मिनिस्टर हो।

मंत्री : काफी समझदार हो, हर बात समझते हो।

ठेकेदार : पर हम इतना सारा कुछ निकालेंगे कहां से ?

मंत्री : लोगों से, लोग बहुत महान हैं, इन लोगों के सिर पर ही तो सारा हिंदोस्तान चल रहा है, लोगों ने हमें भी चुना है। हमने लोगों को हक़ दिया कि वे हमें चुने। वे हमारे अहसानमंद हैं। यह हक़ लोगों को रूस ने नहीं दिया, चीन ने नहीं दिया, पाकिस्तान ने नहीं दिया, हमने दिया है, हमने। इसीलिए लोग बार-बार हमें ही चुनते हैं। ये अपने इस हक़ को बड़ी बात मानते हैं। हमने इन्हें भूख दी, तो भी इन्होंने हमें चुना, हमने इन्हें गरीबी दी तो भी इन्होंने हमें चुना, हमने इन्हें दुनियां के मुल्कों का दो सौ अड़तालीस खरब रुपये का कर्ज़ाई बना दिया, इन्होनें फिर भी हमें चुना। इनमें इतनी सहनशक्ति है कि ये किसी भी बात का बुरा नहीं मनाते। शराब की बोतल में ज़हर घोलकर दे दो, वो भी पिएंगे। ये बातें दिन की रोशनी की तरह साफ हैं, पर हम इन्हें दिन की रोशनी में नहीं बताएंगे। न ही रात के बारह बजे बताएंगे, क्योंकि बारह बजे आधी रात होती है। न चार बजे बताएंगे, क्योंकि चार बजे दिन उगने को होता है *(घड़ी देखकर)* सिर्फ रात के दो बजे ही बता सकते हैं, क्योंकि रात को दो बजे पूरी रात होती है।

ठेकेदार : फिर जनाब, हमारे लिए क्या हुक्म है ?

मंत्री : हुक्म ? क्या अभी बात साफ नहीं हुई ? सारी रात रामायण पढ़ते रहे और सुबह उठकर पूछते हो कि हनुमान कौन था ? हनुमान बड़ा बहादुर था। उसने लंका को फूंक दिया था। हम भी हनुमान के भक्त हैं। हिंदोस्तान को फूंक रहे हैं। हुक्म यही है कि अगर तुम चाहते हो कल कि पूरे इलाके का शराब का ठेका तुम्हें ही मिले तो दस लाख रुपये की नक़द थैली, यहां रख जाओ। तुम शराब की बोतल में शराब बेचो, रंगवाला पानी बेचो, बूटीवाला शर्बत बेचो, या गोली वाला ज़हर बेचो, यह तुम्हारी मर्ज़ी है।

(कुर्सी के नीचे की तरफ इशारा करता है और खुद कुर्सी पर मौन हो जाता है। रोशनी दूसरे दायरे पर पड़ती है हवलदार और कोरस उस दायरे में हैं।)

एक : क्यों हवलदार साहब ?

हवलदार : क्या है ?

दो : उस केस के बारे में आगे कार्रवाई हुई ?

हवलदार : तुम पूछने वाले कौन हो ?

तीन : हां, हम पूछने वाले कौन हैं ?

चार : *(ताना मारते हुए)* और फिर इस हवलदार को क्या पता ?

एक : इन्हें तो बेकार में ही सड़कों पर खड़ा कर देते हैं।

दो : मक्खी-मच्छर उड़ाने के लिए।

हवलदार : *(तैश में आकर)* सालो, वो मक्खी मच्छर नहीं था, मनिस्टर था।

तीन : मिनिस्टर था ? कौन ?

हवलदार : काली कार वाला और कौन ?

चार : वो यहां क्या करने आता था ?

हवलदार : मैं क्यों बताऊं, यह सरकार का खुफ़िया मामला है।

एक : हां, खुफ़िया मामले अफ़सर लोग हवलदारों को कहीं पता चलने देते हैं ?

हवलदार : अरे पता क्यों नहीं चलने देते, हमें सब पता रहता है।

दो : तो फिर वो मनिस्टर यहां क्यों आता था ?

हवलदार : रघुनाथ शाही उसका दोस्त था।

एक : अच्छा तो दोस्त की विधवा से हमदर्दी जताने आता था ?

दो : वो भी काली कार में ?

तीन : जिसके शीशों पर पर्दे लगे होते हैं ?

चार : और आता भी रात के अंधेरे में था ?

हवलदार : भई नेता लोग हैं, जिस वक़्त फुर्सत मिलती थी, उसी वक़्त ही तो आ सकते थे। तुम्हारी तरह बेकार थोड़े ही हैं।

दो : जिस वक़्त फुर्सत मिलेगी तभी तो आ सकेंगे।

तीन : और नेता लोगों को फुर्सत रात से पहले कहां मिल सकती है ?

चार : और खास तौर पर जब किसी अकेली औरत से मिलना हो।

बाकी तीनों : पर वे रात को दो बजे कहां थे ?

हवलदार : इस बारे में भी पूछताछ हुई है।

एक : क्या ?

हवलदार : *(फिर अकड़कर)* तुम्हें क्यों बताऊं ? हर बात ऐरे-गैरे को थोड़ा बताई जा सकती है।

दो : हां, ऐरे-गैरे को थोड़ा बताई जा सकती है ?

तीन : पराये ऐरा-गैरा कौन होता है ?

चार : जिस तरह अपने हवलदार साहब, पूछताछ अफ़सरों ने की होगी और ऐरा-गैरा हवलदार बाहर खड़ा कर दिया होगा।

हवलदार : अरे नहीं सालो, पूछताछ के वक़्त मैं वहीं था। मंत्री जी ने बताया कि अगले दिन बजट पेश होना था। शराब के ठेकों के लिए नई नीति का एलान होना था। इसलिए वे रात भर अपने सचिवों के साथ नीति के बारे में विचार-विमर्श करते रहे।

एक : विचार-विमर्श करते रहे ?

हवलदार : हां, विचार-विमर्श करते रहे कि देश का, सरकार का, लोगों का भला किस प्रकार हो सकता है ? पर तुम्हें इन बातों की समझ नहीं आ सकती। तुमने कभी देश के बारे में, सरकार के बारे में, लोगों के बारे में सोचा। तुमने तो अपने बारे में कभी नहीं सोचा। 'बस खा लिया और हग लिया'।

एक : हां, हमें पता है देश के बारे में कि इसकी साठ फीसदी आबादी भुखमरी के स्तर से नीचे क्यों जी रही है ?

दो : हमें पता है कि देश के चार करोड़ लोग सड़कों पर क्यों सोते हैं ?

तीन : हमें क्या पता कि देश के साठ लाख पढ़े-लिखे नौजवान बेरोजगार क्यों हैं ?

चार : हमें क्या पता कि देशवासी भूख और कंगाली में जी रहे हों तो सरकार एशियाई खेलें, गुट निरपेक्ष कांफ्रेंस और कामनवैल्थ देशों के समागमों पर करोड़ों क्यों खर्च करती है ?

हवलदार : अरे क्या हुआ अगर साठ फीसदी देशवासी भुखमरी स्तर से नीचे जी रहे हैं, पर जी तो रहे हैं, चार करोड़ लोग आसमान की छत के नीचे सो रहे हैं, पर सो तो रहे हैं, साठ लाख पढ़े-लिखे नौजवान बेरोजगार हैं, पर उन्हें पढ़ाया भी तो सरकार ने ही है, यही क्या कम बात है। क्या हुआ देश में भूख और कंगाली है, पर एशियाई खेलों से, गुटनिरपेक्ष कॉन्फ्रेंसों से, कामनवैल्थ देशों के समागम से दुनिया भर में देश के नाम तो मशहूर हो गया, यह क्या छोटी बात है, पर तुम्हें इन बातों का क्या पता ?

एक : हां, हमें इन बातों का क्या पता है, ये तो हवलदार साहब को पता है, जो खाते हैं पर हगते नहीं।

हवलदार : अरे तुम्हें तो यह भी नहीं पता होगा कि उस नौजवान कवि से पूछताछ की जा रही है कि वह रात को दो बजे कहां था।

दो : वो रात को दो बजे कहां था?

तीन : हां हवलदार साहब, वो तो रात को दो बजे कहां था?

चार : हां वो कहां था?

(कोरस के पात्रों को यह सवाल इस तरह से पूछना है कि बात ऊपर की ऊपर रह जाए। रोशनी अब दूसरे दायरे पर पड़ती है। मज़दूरों की टोली बैठी है। ढोलक बज रही है... कवि गीत की अगुआई कर रहा है।)

कवि : *(गीत गाता है)*

ऊंचा ऊंचा महल बनाए पूंजीपतिया,
गरीबवा का रोटी चुराए पूंजीपतिया,
अपने महल में करे वो उजलवा,
बिजरी की बतियां जगाए...
मिलवा में खून जरे, खेत में पसीनवा,
तबहूं न मिले हमें पेट भर दनवा,
अपनी गदमिया तूं ही तो भरवाया,
बड़े बड़े बोरे सियाए... पूंजीपतिया।

कवि : कवि भाई तूने हमारी दुखती रग को छेड़ा है।

दो : मिल में हमारा खून जरे खेत में पसीनवा।

तीन : फिर भी ना मिले पेटभर दनवा।

चार : ऊंचा ऊंचा महल बनाए पूंजीपतिया।

कवि : मेरे दोस्त, मैंने दुखती रग को नहीं छेड़ा, ज़िंदगी की असलीयत को गाया है।

एक : कवि भाई, तुम तो बहुत किताबें पढ़ा है। क्या बाकी दुनिया में भी यही हालत है, जो अपने देश में हैं?

दो : क्या वहां भी मजदूरी कोई और करे है, और खाए और कोई है?

तीन : क्या वहां भी जो मिट्टी से मिट्टी होकर धान पैदा करे वो फिर मुट्ठी भर चावल के लिए हाथ फैलावै है?

चार : क्या वहां भी जवान बेटियां खुदको बूढ़े खूसटों के हाथ बेच देवैं हैं ताकि उनके छोटे बहन भाइयों को पेट भरके खाना मिल सके? बताओ कवि भाई, बताओ।

कवि : जहां जहां भी पूंजीपतियों का समाज है, वहां ऐसा ही चलता है मेरे भाइयों, मगर सारी दुनिया में नहीं। बहुत जगह पर मज़दूर लोगन ने अपना पक्ष का सरकार बना लिया है और बहुत जगह पर लोग इसके लिए संघर्ष कर रहे हैं। जो गीत मैंने गाया है, सारी दुनिया के मेहनतकश लोग ऐसे गीत बोलै हैं। तुम्हें दक्खिन अमेरिका के काले लोगों का एक गीत सुनाते हैं—

हर एक को जीने का हक़ है कि वो जिए,
हम जीना चहते हैं।
हमने इस धरती में अनाज को बोया,
इस धरती में तेल के कुएं खोदे,
इस धरती पर जो कुछ भी खड़ा है,
हमारी मेहनत के दम पर ही खड़ा है,
हम अपने हिस्से की चांदनी मांगते हैं,
हम अपने हिस्से का इंसाफ मांगते हैं,
हमारा भी जीने का हक है,
हम वो हक़ मांगते हैं।

(मज़दूरों की टोली में से एक बूढा भावुक होकर)

बूढ़ा : हां मैं जीने का हक़ मांगता हूं, अपने लिए, अपनी बेटी के लिए... हां हां, मैंने उसे नहीं बेचा, वो खुद ही बिक गई, मेरे लिए अपनी मां के लिए, अपने छोटे भाई के लिए।

(इसी तरह बोलता हुआ वह बाहर चला जाता है।)

एक : बहुत दुखी है बेचारा।

दो : अपनी बेटी को बहुत याद करता है, पर उससे मिलता नहीं।

तीन : इसी शहर में है, एक सेठ ने उसे खरीद लिया था।

चार : शादी रचाई थी, सेठ मर गया और वो जवां उम्र में विधवा हो गई।

कवि : *(एकदम भावुक होकर)* जिसे सेठ ने खरीदा था, जो जवां उम्र में विधवा हो गई ?

एक : क्या हुआ कवि भाई ?

कवि : *(संभलते हुए)* कुछ नहीं... देखो, अब तो रात कितनी बीत गई है, अब तो सुबह होने वाली है।

दो : हमारी दुनिया में सुबह कब होगी ?

कवि : होगी, ज़रूर होगी। *(फिर एक शेर गुनगुनाता है)*

क्या डर है, जो नूर की चाहत में
हमें भी शबे ग़म खा जाए
कुछ लोग तो ऐसे भी होंगे,
जो सुबह-ए-दरख्शां देखेंगे।
(धीरे धीरे रोशनी मद्धम होती है)
(रोशनी होने पर हवलदार कवि वाला शेर गुनगुना रहा है, एक, दो, तीन, चार उसे संबोधन करते हैं।)

एक साथ : जय हिंद, हवलदार साहब।

हवलदार : जयहिंद, जयहिंद, जयहिंद दोस्तो।

एक : हवलदार साहब, आज तो सूरज पश्चिम से निकलेगा।

दो : और पूरब में डूबेगा।

तीन : चूहा बिल्ली पर झपटेगा।

चार : पानी नीचे से ऊपर की तरफ बहेगा।

हवलदार : क्यों भाई ऐसी क्या बात है ?

एक : हवलदार साहब आप गा रहे थे।

दो : एक गीत गुनगुना रहे थे।

तीन : और गीत भी किसी छम्मक-छल्लो का नहीं।

चार : बल्कि किसी सुबह का गीत।

एक : अगर पुलिस का कोई आदमी कोई गीत गाए।

दो : तो सूरज पश्चिम से निकलना ही हुआ।

तीन : और गीत भी अंधेरे के मिटने का।

चार : तो पानी नीचे से ऊपर की तरफ बहना ही हुआ।

हवलदार : अरे सालो, यह गीत मैंने नहीं उस कवि ने गाया था, जब उससे पूछा गया कि रात के दो बजे कहां था ? *(बदलकर)* पर तुम क्या समझते हो ? पुलिस वाले गधे होते हैं ? वे गीत नहीं गा सकते ? अरे उनके भी दिल हैं, किसी सुंदर चीज़ को देखकर वे भी तारीफ कर सकते हैं, कोई बढ़िया गीत सुनकर वे भी झूम सकते हैं, पर तुम यह नहीं समझोगे। इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं। सारा कसूर इस वर्दी का है। आदमी आदमी ही नहीं रहता, पर वो कवि बढ़िया इंसान है, दूसरों के दुख बंटाता है। रात को दो बजे तक लोगों को समझाता है कि उनके खून पसीने की कमाई कौन लूटता है ?

एक : पर वो रघुनाथ शाही के घर क्या करने आता था ?

हवलदार : वो अभी तक एक गुत्थी है, जो धीरे-धीरे सुलझेगी।

दो : लाखों उंगलियां उलझन खोल थकीं, तेरी ज़ुल्फ़ का सीधा ना बाल हुआ।

हवलदार : अरे हरेक को अपने जैसा ना समझा करो, इंसान,इंसान में और भी बहुत रिश्ते होते हैं।

तीन : बंद कमरों में किसी का क्या रिश्ता होता है, हमें थोड़े ही पता चलता है?

हवलदार : हां, नहीं पता चल सकता, इसलिए चुप रहना भी सीखना चाहिए।

चार : हां, रात के अंधेरे में क्या होता है, इसके बारे में पता थोड़ा ही चल सकता है, इसलिए चुप ही रहना चाहिए।

हवलदार : हां चुप ही रहना चाहिए *(बदलकर)* पर मैं तो अंदर से बाहर आया था, चाय के लिए कहने और तुमने मुझे बातों में लगा लिया।

एक : घर के अंदर क्या हो रहा है?

हवलदार : उस लड़के से पूछताछ हो रही है जो उस औरत का भाई है और उस रात उससे मिला था, *(बदलकर)* पर तुम यहां मत खड़े रहे, यहां खड़ा होने की मनाही है। (लोग पहले इधर-उधर होते हैं, पर हवलदार के जाने के बाद फिर इकट्ठे हो जाते हैं। कान लगाकर सुनते हैं। इंस्पेक्टर लड़के से पूछताछ कर रहा है।)

इंस्पेक्टर : तो श्रीमती रघुनाथ तेरी बहन थी?

लड़का : श्रीमती रघुनाथ मेरी बहन नहीं थी, सीता मेरी बहन थी।

इंस्पेक्टर : और यह क़त्ल रात के दो बजे हुआ?

लड़का : रात के दो बजे क़त्ल हुआ? इंस्पेक्टर साहब आपको ग़लती लगी है।

इंस्पेक्टर : क्या मतलब?

सीता का क़त्ल तो उसी रात को हो गया था, जब बूढ़े बाप के लिए बीमार मां के लिए भाई की पढ़ाई के लिए उसने अपने आप को सेठ रघुनाथ के पास बेच दिया था। उस रात के बाद से वह कितनी बार जी और कितनी बार मरी और अब आप कह रहे हो कि उसका क़त्ल हो गया है।

इंस्पेक्टर : हां तो इत्तला के मुताबिक उस रात तू श्रीमती रघुनाथ से मिला था?

लड़का : मैं अपनी बहन सीता से मिला था।

इंस्पेक्टर : उस वक़्त वहां कौन था?

लड़का : मेरे सिवाए कोई नहीं था, पर मैं यह कह सकता हूं कि मेरे आने से पहले वहां कोई दूसरा ज़रूर आया था, मुझ से बातें करते हुए भी वो इस तरह लग रही थी कि जैसे कहीं दूर बातें कर रही हो, बार-बार वह एक ही शेर गुनगुना रही थी।

इंस्पेक्टर : कौन सा शेर?

लड़का : क्या डर है जो नूर की चाहत में,
हमो भी शब-ए-ग़म खा जाए।
कुछ लोग तो ऐसे भी होंगे,
जो सुबह-ए-दरख्शां देखेंगे।
मैंने जब सीता से उसका मतलब पूछा तो उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर दवाया। उस वक़्त उसकी आंखों में अजीब चमक थी, वह टकटकी बांधे दूर किसी चीज़ को देख रही थी। उसने मेरे कानों में धीरे से कहा...

इंस्पेक्टर : क्या कहा?

लड़का : क्या हुआ मैं अंधेरे में मिट गई मेरे भाई, तू तो एक दिन सुबह ज़रुर देखेगा।

इंस्पेक्टर : उसके बाद क्या हुआ?

लड़का : उसने मुझे एक डायरी दी।

इंस्पेक्टर : डायरी, क्या श्रीमती रघुनाथ पढ़ी हुई थी?

लड़का : इंस्पेक्टर साहब, श्रीमती रघुनाथ नहीं, सीता पढ़ी हुई थी। सीता ने कभी अपने आपको श्रीमती रघुनाथ स्वीकार नहीं किया था और यह भी सच है कि रघुनाथ ने भी कभी उसे पत्नी नहीं माना था। वह उस सेठ के बड़े व्यापार की एक कड़ी थी, उसके व्यापार को बढाने का एक साधन भी, वह व्यापार जो पूरी तरह काला था, जिसमें कुछ भी सफेद नहीं था। पर तुम्हें यह सब बताने का क्या फायदा? इस समाज में जो कुछ भी सफेद काला होता है, वह आपकी जानकारी और रजामंदी से होता है और उसकी आपको पूरी कीमत अदा की जाती है।

इंस्पेक्टर : यह तू कैसे कह सकता है?

लड़का : मैं नहीं *(बैग में से डायरी निकालकर)* इस डायरी का एक-एक पन्ना कहता है।
(पृष्ठभूमि से आवाज़)

आज सेठ जी एक नए ग्राहक को घर लाए। बड़ा बेहूदा किस्म का आदमी था। सफेद दुधिया लिबास था। किसी सरकारी कुर्सी का मालिक था। उसे कुर्सी का नशा था, या शराब का, यह मैं नही कह सकती, पर उसके बोले हर शब्द में से, हर ठहाके से बेहूदगी टपक रही थी। मेरी ओर देखकर बदमाशी भरी हंसी हंसकर कहने लगा, ''रघुनाथ तुम्हें व्यापार करना आता है, तुम्हें पता है कि कौन सा माल कहां से लेना है और किस ग्राहक को किस कीमत पर बेचना है। हम तुम्हारे चुनाव की दाद देते हैं। हमें सौदा मंजूर है। तुम्हें तुम्हारी कीमत मिल जाएगी।'' मुझे पता चला कि उसकी कीमत एक बड़े ठेके की शक़्ल में थी, जिसमें लाखों का मुनाफा था। इसके बाद काले पर्दों वाली कार में आने वाला सफेद खद्दरपोश इस घर में आने वाले मेहमानों में पक्के तौर पर शामिल हो गया।

(रोशनी मद्धम होती है एक, दो, तीन, चार पर पड़ती है।)

एक : इसे कहते हें देश सेवा।

दो : सेवा जो महात्मा गांधी के नाम पर करते हें।

तीन : सेवा की सेवा, मेवा का मेवा।

चार : न कोई उलझन न कोई भुलावा।

एक : सुना, ऊंची हवेली में क्या होता है ?

दो : यह कोई नई बात नहीं हैं।

तीन : इससे तो भैया अपनी झोंपड़ियां भली।

चार : पर हमारी झोंपड़ियां और भी अच्छी हो सकती है, अगर ये हवेलियां थोड़ी नीची हो जाएं।

दो : क्या मतलब ?

चार : इन हवेलियों में जो भी काला व्यापार होता है, हमें समझ लेना चाहिए कि यह हमारी ज़िंदगी की कुछ न कुछ रोशनी छीन रहा है। हमें इस बात की फिक्र होनी चाहिए कि हमारे हिस्से की रोशनी छीनी न जा सके।

दो : इसी रघुनाथ मंदिर निर्माण के वक़्त हजारों का दान दिया था और हमने उसका प्रभुभक्ति के कितने गीत गाए थे।

दो : मैंने तो उस वक़्त भी आवाज़ उठाई थी *(तीन को संबोधित करते हुए)* ये चंद लेने वालों में सबसे आगे था।

तीन : अगर सेठ से चंदा न लिया जाता तो मंदिर निर्माण का कार्य पूरा कैसे

होता ?

चार : अगर इस तरह के मंदिर न भी बनते तो हमारी सेहत पर क्या फर्क पड़ना था ?

एक : जिस काले व्यापार में सीता जैसी लड़कियां रोज़ दम तोड़ रही हों, उस व्यापार से कमाए पैसे से अगर राम के मंदिर बनाए जाएं, इससे बड़ा धोखा और कोई नहीं।

दो : अब तो सारी ज़िंदगी धोखा हो गई है। छोटे-छोटे धोखों से शुरू होती है, फिर बड़े-बड़े धोखों का रूप ले लेती है और सबसे बड़ा धोखा ईश्वर के बनाए घरों में है।

तीन : तुम तो यारो छोटी सी बात को पकड़कर बैठ गए हो। अब तुम ही बताओ, ये जो शानदार मंदिर, गुरुद्वारे, मस्जिदें, गिरजे तैयार होते हैं, गरीब तो नहीं बना सकते, हरिमंदिर साहब पर सोने की परत महाराणा रणजीत सिंह ने चढ़ाई, घोड़े की काठी को अपना घर कहने वाले सिंहों ने नहीं चढ़ाई।

चार : पर जो सिक्खी घोड़े की काठी को घर बनाने वालों में थी, वह सोने की परतें चढ़ाने वाले महाराजाओं में नहीं थी। पर उधर ध्यान दो, डायरी का दूसरा पन्ना पढ़ा जा रहा है— *(डायरी पढ़ने की आवाज़)* इस घर में आए मुझे बहुत समय नहीं हुआ, हर दिन कोई न कोई नया तजुर्बा हो रहा है, आज एक ज्ञानी जी आए थे। सेठ जी से उन्हें कोई सौदा करना है। सेठ जी ने जान बूझकर मुझे चाय लाने को कहा। चाय लेकर गई तो वो कहने लगा, "ये बीबी नई आई है ?" उसके अंदाज से लग रहा था कि वो इस घर में नई बीबियों को देखने का अभ्यस्त है। इस घर में अक्सर आने वालों में से वह भी एक है। बार्डर के आर-पार जो धंधा होता है, उसमें वह सेठ जी का हिस्सेदार है। पहले कम आता था अब अक्सर ही आता है। शराब की महफिलें सजती हैं। शराब की महफिलों के बाद जो कुछ मेरे साथ होता है, वो पहले-पहल बड़ा अजीब लगता था, पर अब फर्क नहीं पड़ता, सिर्फ घृणा होती है। मुझे पता चला है कि ये ज्ञानी जी किसी गुरुद्वारे के जत्थेदार भी हैं, पर अब तो ऐसे लगता है, जैसे उन्होंने गुरुद्वारा यहीं बना लिया है, क्योंकि वे उसी नियम से यहां आते हैं, जिस नियम से गुरुद्वारा जाते हैं। मुझे इस चौगिरदे से घृणा है। मैं चाहती का इलाज हो सकेगा ? मेरे छोटे भाई की पढ़ाई पूरी हो

सकेगी ? नहीं, मुझे यह सब कुछ बर्दाश्त करना ही पड़ेगा।

(रोशनी एक, दो, तीन, चार पर पड़ती है। हवलदार उन्हें कानों से पकड़कर ऊपर उठाता है।)

हवलदार : अरे सालो, तुम चोरों की तरह क्या सुन रहे हो ?

एक : किस्सा-ए-ज्ञानी सुन रहे हैं।

हवलदार : किस्सा-ए-ज्ञानी ?

एक : हां जिस तरह किस्सा-ए-सैफ उल मलिक होता है, किस्सा-ए-हीर रांझा होता है, उसी तरह किस्सा-ए-ज्ञानी भी एक चीज़ है।

दो : हां ज्ञानी, जो राजदूत मोटर साइकिल पर आता था।

तीन : वो धंधा क्या है, जो बार्डर के इस पार से उस पार होता है ?

चार : हवलदार जी, ये ज्ञानी रात के दो बजे कहां था ?

हवलदार : रिकॉर्ड बताता है कि रात के दो बजे अखंड-पाठ पढ़ रहा था।

एक साथ : अखंड-पाठ ?

हवलदार : हां अखंड-पाठ, जो लगातार दिन-रात पढ़ा जाता है। एक उठता है, दूसरा पढ़ने लग जाता है। दूसरा उठता है तो तीसरा पढ़ने लग जाता है। तीसरा उठता है तो चौथा पढ़ने लग जाता है। *(बदलकर)* हर कोई अखंड-पाठ नहीं पढ़ सकता। सिर्फ ज्ञानी-ध्यानी ही पढ़ते हैं।

चार : हवलदार जी, वो ज्ञानी जो ध्यानी भी था, यहां क्या करने आता था ?

हवलदार : अरे आदमी को एक दूसरे से सौ काम पड़ते हैं, सीता ज्ञानी जी की बेटी जैसी थी।

चार : हां, सेठ जी के जाने के बाद बेटी के सिर पर कभी-कभी प्यार देने आता था।

हवलदार : हां, ये भी उसने बयान में कहा, पर तुम्हें किस तरह पता है ?

एक : हमें किसने बताना है ? बस अपने आप पता चल गया।

दो : हवलदार जी, अगर कोई रात के अंधेरे में मोटर साइकिल पर चढ़कर किसी अकेली औरत के पास आए तो वह सिर पर प्यार का हाथ रखने ही आता है।

तीन : हम पुलिस में तो नहीं, पर इतना तो समझ ही सकते हैं।

हवलदार : अगर तुम्हें पता ही है तो मुझ से क्यों पूछते हो ?

चार : अच्छा यह बताओ, ज्ञानी जी ने बयान में और क्या कहा ?

हवलदार : कि सीता उनकी बहुत इज्ज़त करती थी।

एक : वह तो सीता की डायरी में लिखा ही है कि वो उनकी कितनी इज्ज़त

करती थी।

हवलदार : लिखने को चाहे कोई कुछ भी लिख दे *(बदलकर)* अरे इधर आओ, तुम्हें एक राज़ की बात बताऊं, फिर कहोगे हवलदार को कुछ पता ही नहीं, हवलदार कोई यूं ही दुक्की-तिक्की नहीं होते, उन्हें सब पता रहता है *(और नज़दीक जाकर)* ये ज्ञानी बहुत बड़ा समगलर है, सेठजी के व्यापार का हिस्सेदार- इसीलिए सेठानी से हिस्सा बंटवाने आता है। समझे। *(चारों सिर हिलाते हैं। रोशनी लड़के और इंस्पेक्टर पर पड़ती है।)* डायरी पढ़ने की आवाज़ : मैं शायद आज अपनी डायरी का आखिरी पन्ना लिख रही हूं, अभी अभी रत्न उठकर गया है। रत्न एक कवि है। इस घर में आकर रत्न ही एक ऐसा प्राणी मिला जो हमदर्द भी है, दोस्त भी है। पहले दिन उसने मुझे लूना कहकर संबोधित किया। उसका मेरे साथ रिश्ता लूना और पूरन वाला ज़रूर है। पर मेरे जज़्बात उसके लिए लूना जैसे नहीं हैं। वह कभी- कभी यहां आता है। कानूनी तौर पर उसका यहां आने का हक़ है। यह उसके बाप का घर है। बेशक उसने सेठजी को यह हक़ नहीं दिया कि वे उसे बेटा कह सकें। कोई न कोई शेर बोलते रहना उसकी आदत है। मैं बहुत परेशान हूं। पहले मंत्री जी होकर गए हैं। वो गए तो ज्ञानी जी आ गए। वे क्यों आते हैं ? उन्हें क्या हक़ है ? पर वे हक़ समझते हैं...

मैं क्या कर सकती हूं ? मैं चीख-चीखकर कहना चाहती हूं, पर इन बंद दीवारों में कौन मेरी चीख की आवाज़ सुनेगा ? रत्न शेर गुनगुना रहा है—

क्या डर है जो नूर की चाहत में
हमको भी शब-ए-ग़म खा जाए
कुछ लोग तो ऐसे भी होंगे,
जो सुबह-ए दरख्शां देखेंगे।

ये शेर मुझे कुछ करने के लिए कह रहा है। मैंने फैसला कर लिया है।... ये लंबी ज़िंदगी जीन से मिट जाना ही अच्छा... हां कुछ लोग तो ऐसे होंगे जो चमकती सुबह को अपने दर पर देखेंगे।

(कुछ देर चुप्पी... रोशनी लड़के और इंस्पेक्टर पर पड़ती है।)

इंस्पेक्टर : हां, इससे यह तो साबित हो गया कि श्रीमती रघुनाथ ने अपनी मर्ज़ी से अपनी ज़िंदगी ख़त्म की है।

लड़का : श्रीमती रघुनाथ ने अपनी ज़िंदगी ख़त्म तो ज़रूर खुद की है पर मैं फिर कहता हूं कि मेरी बहन सीता का क़त्ल किया गया है, तुम्हें यह फैसला करना ही होगा कि यह क़त्ल किसने किया है? कौन है इसका जिम्मेदार?

(लड़के द्वारा जब यह प्रश्न पूछा जाता है तो रोशनी कोरस पर पड़ती है।)

एक : कौन इस क़त्ल का जिम्मेदार है?

दो : कौन इस क़त्ल का ज़िम्मेदार है?

तीन : कौन इस क़त्ल का ज़िम्मेदार है?

चार : कौन इस क़त्ल का ज़िम्मेदार है?

(कोरस के सवाल के साथ आवाज़ ऊंची होती है।)

एक : क्या यह क़त्ल सेठ रघुनाथ शाह ने किया, जो एक ग़रीब की मजबूरी का फ़ायदा उठाकर सीता को इस क़त्लगाह तक ले आया?

दो : क्या यह क़त्ल उस सफेद खद्दरपोश मंत्री ने किया, जिसने कुर्सी के नशे में सीता की इज्ज़त का सौदा किया?

तीन : क्या यह क़त्ल उस ज्ञानी ने किया, जिसने बेटी जैसी सीता को अपनी हवस का शिकार बनाया?

चार : क्या वो कवि इस क़त्ल के इल्ज़ाम से बरी हो सकता है जिसने सिर्फ सुबह का गीत गाया, उस सुबह को लाने में कोई योगदान नहीं दिया।

एक : क्या हम सब इल्ज़ाम से बरी हैं, जो किसी न किसी सीता के क़त्ल को सिर्फ तमाशाई की तरह देखते हैं।

दो : क्या हम बरी हैं?

तीन : क्या तुम बरी हो?

चार : क्या यह सारा समाज, यह भाईचारा बरी है?

दो, तीन : नहीं।

एक : तो फिर आओ कोई चारा करें। क़त्लगाहों पर सलीबों की तरह न लटके रहें। सवाल को सवाल न रहने दें, सवाल का जवाब ढूंढ़े।

दो : क्योंकि सीता का सवाल हमारा सवाल है।

तीन : सीता का दुख हमारा दुख है।

चार : सीता का क़त्ल हमारा क़त्ल है।

(वे वहां पर मूक हो जाते हैं, पीछे से गीत की आवाज़ उभरती है।)

क्या डर है जो नूर की चाहत में
हमको भी शब-ए-ग़म खा जाए
कुछ लोग तो ऐसे भी होंगे,
जो सुबह-ए दरख्शां देखेंगे।

नोट : यह शेर जगमोहन जोशी की ग़ज़ल से है।